कक्षा-आठवीं

विषय-नैतिक शिक्षा (प्रथम)

अंक विभाजन एवं उत्तर संकेत **अधिकतम अंक 80**

सामान्य निर्देश : यदि परीक्षार्थी ने ऐसा कोई सही उत्तर लिखा हो जो इस उत्तर संकेत में न हो तो उसके भी यथासंभव अंक दिए जाएँ।

प्रश्न संख्या	अपेक्षित मूल्यांकन बिंदु	निर्धारित अंक	कुल अंक
	(खण्ड-क)		
1.	(ग) आकाश	1	1
2.	(ख) वैदिक	1	1
3.	(घ) ओ३म्	1	1
4.	(ख) बुद्धि	1	1
5.	(क) गायत्री मन्त्र	1	1
6.	(ग) बुद्धि	1	1
7.	(क) बारह वर्ष	1	1
8.	(घ) राजा हरीसिंह	1	1
9.	(घ) चाँदनी	1	1
10.	(ख) भारत भूमि को	1	1
	(खण्ड-ख)		
11.	श्री गुरुनानक देव जी महाराज ने कहा है–''एक ओंकार सत् नाम कर्ता पुरख।'' ओ३म् और ओंकार दोनों का तात्पर्य एक ही है।	2	2
12.	कभी भी, जीवात्मा।	1+1	2
13.	डी॰ए॰वी॰ संस्था की सुख, ऐश्वर्य, समृद्धि की कीर्ति चारों ओर फैले।	2	2

14.	सत्य बोलो। प्रिय बोलो। सत्य इस तरह न बोलो, जो अप्रिय हो (दूसरे को बुरा लगे।)	2	2
15.	धन की शुद्धि का अभिप्राय यह है कि हमारी कमाई ईमानदारी की हो। चोरी, ठगी, लूटपाट, शोषण की न हो। खून-पसीने की हो।	2	2
16.	वर्ण चार हैं–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।	½×4	2
17.	ब्रह्मचर्य आश्रम– जन्म से पच्चीस वर्ष गृहस्थ आश्रम– पच्चीस से पचास वर्ष वानप्रस्थ आश्रम– पचास से पचहत्तर वर्ष संन्यास आश्रम–पचहत्तर से आयु पर्यन्त	½×4	2
18.	भक्त के अपने पाप कर्म ही उसे भगवान से मिलने में रुकावट पैदा करते हैं।	2	2
19.	1. हिन्दी भाषा तथा उसके पढ़ाने का प्रबन्ध। 2. वैदिक संस्कृति और संस्कृत भाषा के पढ़ाने की व्यवस्था। 3. अंग्रेजी भाषा एवं विज्ञान की शिक्षा का पूर्ण प्रबंध। 4. शिल्प शिक्षा द्वारा व्यवसाय की शिक्षा।	½×4	2
20.	डी॰ए॰वी॰ कॉलेज मैनेजिंग कमेटी ने उनकी सेवाओं को चिरस्थायी बनाए रखने के लिए उनके जन्म स्थान काँगड़ा में उनकी स्मृति में उनके नाम पर कॉलेज का नामकरण किया है। इसी प्रकार चंडीगढ़ में भी लड़कियों के लिए डी॰ए॰वी॰ कॉलेज की स्थापना की।	1+1	2
	(खण्ड-ग)		
21.	ईश्वर एक है परन्तु उसके नाम अनन्त हैं। ईश्वर के गुण, कर्म और स्वभाव अनन्त हैं अतः उसके नाम भी अनन्त हैं। इन सब नामों में 'ओ३म्' नाम सर्वोत्तम है। यह परमात्मा का मुख्य और निज नाम है।	3	3
22.	अर्जुन अपने सामने युद्ध के लिए विपक्ष में खड़े अपने सगे-सम्बन्धियों को देखकर मोह (अपनों से आसक्ति) से घिरकर हताश और व्याकुल हो जाते हैं। वे श्रीकृष्ण जी से कहते हैं–''केशव! मैं सब कुछ छोड़कर जंगल चला जाऊँगा, संन्यास ले लूँगा, सभी दुःख झेल लूँगा, किन्तु अपने सगे-सम्बन्धियों के खून से हाथ रंगकर राज सुख नहीं भोग सकता। मैं यह युद्ध कदापि नहीं कर सकता।''	3	3

23.	''समस्त दु:खों के अपार सागर से पार करने वाली गायत्री है। इसीलिए इसको पापनिवारणी, दु:खहारनी, त्रिलोक तारनी कहते हैं।	3	3
24.	घटिया माल को बढ़िया बताकर बेचना, मिलावट करना, कम तोलना या नापना, जो निर्धारित काम से कम काम करता है या अपने काम को लगन से नहीं करता है।	3	3
25.	गीता में तीन प्रकार के तप बताए गए हैं–शरीर का, वाणी का और मन का। शरीर का तप यह है कि सात्त्विक भोजन करें और घूमें। वाणी का तप यह है कि सत्य, प्रिय और मीठा बोलें। मन का तप यह है कि बुरे भावों और विचारों से मन को बचाकर रखें उसे शुद्ध और पवित्र संकल्पों से भरपूर रखें।	3	3
26.	आधुनिक भाषा में इनका नामकरण इस प्रकार किया जा सकता है (1) शिक्षक (2) रक्षक (3) पोषक (4) सेवक। कर्मचारियों की प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ श्रेणी, वर्ण व्यवस्था का ही आधुनिक रूप है।	3	3
27.	ऋषि-मुनियों के अनुसार विद्यार्थी का जीवन बहुत ही सादा, संयमी एवं अनुशासित होना चाहिए। इस काल में विद्यार्थी को विद्या प्राप्त करने के लिए कठोर परिश्रम करना चाहिए।	3	3
28.	'विराट' जो बहु प्रकार के जगत् को प्रकाशित करता है। 'अग्नि' जो ज्ञान स्वरूप, सर्वज्ञ और पूजा करने योग्य है।	1½+ 1½	3
29.	उनके अनुसार कोई भी विदेशी राज्य चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो, स्वदेशी राज्य के समान नहीं हो सकता। विदेशी राज्य में कोई सुखी नहीं रह सकता।	3	3
30.	मितव्ययता की दृष्टि से डी॰ए॰वी॰ संस्थाएँ आदर्श मानी जाती हैं। जनता द्वारा श्रद्धापूर्वक दिए गए दान से आज भी बिना किसी फालतू खर्च के ये संस्थाएँ अपने उद्देश्यों को पूर्ण करने में सक्षम हैं।	3	3
	(खण्ड-घ)		
31.	संस्कृत और भारतवासियों का माता और पुत्र का सम्बन्ध है। संस्कृत भाषा सारी भाषाओं से प्राचीन है, अतएव संस्कृत भाषा अन्य भाषाओं की जननी है। इस भाषा के समान मृदुलता, मधुरता		

	और व्यापकता किसी भाषा में नहीं है। भारत की समस्त भाषाओं का स्रोत संस्कृत है। संस्कृत के भंडार से ही विभिन्न भाषाओं के शब्द निकले हैं और निकलते जा रहे हैं। समस्त प्राचीन साहित्य, वेद, ब्राह्मण, उपनिषद्, दर्शन, धार्मिक ग्रन्थ और इतिहास आदि संस्कृत भाषा में लिखे गए हैं। अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए भी संस्कृत का ज्ञान होना बहुत आवश्यक है।	5	5
	अथवा		
	डॉ. राममनोहर लोहिया भारत में अंग्रेजी के स्थान पर लोकभाषा की प्रतिष्ठा के पक्षपाती थे। उनका कहना था कि भारत की भाषाओं में संस्कृत के आधार पर नए-नए शब्दों को बनाने की अपार क्षमता है। महात्मा गाँधी अपने संस्कृत के अध्यापक पांडेय जी का आजीवन आभार मानते रहे क्योंकि उस संस्कृत के सहारे ही वे गीता जैसे ग्रन्थों के रस का आनन्द ले पाए। उन्हें अधिक संस्कृत न पढ़ पाने का पछतावा रहा। उनकी दृष्टि में किसी भी हिन्दू बालक को संस्कृत ज्ञान से वंचित नहीं रहना चाहिए।	2½+ 2½+	5
32.	सन्त सिपाही दशमेश गुरु गोविन्द सिंह सारे देश की स्वतंत्रता एवं अखंडता का स्वप्न सँजोए हुए थे। वे इसी निमित्त शिवाजी के पुत्र शम्भाजी से मिलने दक्षिण गए थे। गुरुजी ने खालसा पन्थ में दीक्षित होने वाले अपने अनुयायियों को जो जयघोष प्रदान किया वह सारे देश के विचार से हिन्दी में था और आज भी हिन्दी में ही लगाया जाता है : ''वाहे गुरु का खालसा, वाहे गुरु की फतह।'' गुरु जी का दशमग्रन्थ भी (जफरनामा छोड़कर) हिन्दी में ही है।	5	5
	अथवा		
	विद्वत् शिरोमणि डॉ. रघुवीर की मान्यता थी, ''जब तक भारतवर्ष में अंग्रेजी का प्रयोग होगा तब तक भारतीय जनता और भाषाएँ एक-दूसरे के समीप नहीं आ सकेंगी।'' लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने कहा था, ''मेरा यह सुनिश्चित मत है कि विदेशी भाषा के अनिवार्य रहते हमारे शिक्षार्थियों में राष्ट्रीय स्वाभिमान का विकास नहीं हो सकता। स्वतन्त्र भारत में अंग्रेजी को अनिवार्य रखना राष्ट्रीय स्वाभिमान के प्रतिकूल है।	2½+ 2½+	5
33.	इसका अर्थ है–माता-पिता, सास-ससुर, साधु-महात्मा, गुरुजन एवं अन्य वृद्धजनों की सेवा करना। इस सेवा से उनका आशीर्वाद मिलता		

	है। आशीर्वाद से सुख मिलता है, उन्नति होती है। मनुस्मृति में लिखा है:- जो अभिवादनशील है और वृद्धों की नित्य सेवा करता है, उसके आयु, विद्या, यश और बल, ये चारों चीजें बढ़ती हैं।	5	5
	अथवा		
	सम्पूर्ण संसार में तीन गुण–'सात्त्विक, राजसिक और तामसिक' विद्यमान हैं। किसी वस्तु में एक गुण अधिक है, किसी में दूसरा। जल में सत्त्वगुण प्रधान है। यह सात्त्विक गुण स्नान के साथ ही मनुष्य के अन्दर भी आता है। इसलिए हमारे धर्म में प्रत्येक स्थान पर, प्रत्येक बात के लिए स्नान को महत्त्व दिया गया है। स्नान के पश्चात् सन्ध्या करके गायत्री मन्त्र का जाप करके ईश्वर तथा आत्मा का चिन्तन करना चाहिए और यह सब कुछ ब्रह्ममुहूर्त में सूर्योदय से पूर्व करना चाहिए तथा शाम को सूर्यास्त से पूर्व।	5	5
34.	हमारा व्यवहार समाज के अन्य सभी लोगों के साथ प्रीतिपूर्वक होना चाहिए। हमें सबके साथ प्यार से बोलना चाहिए, किसी के साथ कड़वा या कठोर व्यवहार नहीं करना चाहिए। परन्तु प्रीतिपूर्वक व्यवहार का यह अर्थ नहीं है कि जो व्यक्ति हमारे साथ शत्रुता या नीचता का व्यवहार कर रहा है उसके साथ भी हम वही प्रीति निभाएँ, जो अपने मित्र के साथ निभा रहे हैं। यह धर्म के विरुद्ध है। इसलिए हमारा व्यवहार प्रीतिपूर्वक होने के साथ-साथ धर्म के अनुसार भी होना चाहिए।	5	5
	अथवा		
	व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए समाज में हर स्थान पर अलग-अलग नियम बने होते हैं। जैसे खिलाड़ी को खेल के मैदान में, विद्यार्थी को विद्यालय में तथा सिपाही को युद्ध के मैदान में कुछ विशेष नियमों का पालन करना अनिवार्य है। आप किसी सर्वहितकारी कार्य के लिए धन का दान करना चाहते हैं तो आप अपनी इच्छा से कर सकते हैं। जैसे किसी औषधालय, विद्यालय या अनाथालय जैसी संस्था को दान करने के लिए हर व्यक्ति स्वतन्त्र है परन्तु देशद्रोहियों को सहायता देने के लिए आप स्वतन्त्र नहीं हैं।	5	5